भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा के क्राँतिकारी महिला दुर्गाबाई आर्य का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसरए विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि॰प्र॰)

सार:-(इंजतंबज) माता दुर्गाबाई आर्य 20वीं शताब्दी की काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र की पहली क्राँतिकारी महिला थी। उसने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारी तरीकों को अपनाकर अंग्रेजों को बलपूर्वक वाहर निकालने के लिए संघर्ष किया और अपना सारा जीवन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को अर्पित कर दिया। उसका नाम काँगड़ा क्षेत्र में स्वतन्त्रता आन्दोलन के अन्तर्गत महिलाओं में जागृति उत्पन्न करने के लिए विशेष स्थान रखता है।

1ण्भूमिकाः-

1905 में काँगड़ा क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्धए स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्राँतिकारी आन्दोलन की शुरूआत हुईए तो पहली क्राँतिकारी महिला दुर्गाबाई आर्य ने क्राँतिकारी आन्दोलन में वढ़ चढ़ कर भाग लेना शुरू किया।

2ण् साहित्य की समीक्षाः-

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आजादी में अपना योगदान दियाए इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है।

3ण् उद्देश्यः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4ण्कार्यप्रणालीः-

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है। मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है।

5ण् योगदानः-

माता दुर्गाबाई आर्य का जन्म 9 अगस्तए 1984 को वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर के गलोड़ गाँव के निवासी स्व॰श्री गोकुलचन्द के घर हुआ।[1] उसका विवाह ऊना निवासी स्व॰श्री टीकमचन्द के सपुत्र प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी बाबा लक्ष्मणदास आर्य के साथ अक्तूबरए1900 में हुआ था।[2]

1905 में जब उसके पति बाबा लक्ष्मणदास आर्य ने अंग्रेजों के अत्याचारों से तंग आकर और अजीत सिंह के विचारों से प्रभावित होकर धर्मशाला से पुलिस सारज़ैन्ट की नौकरी छोड़ दी तो उनकी पत्नी श्रीमती दुर्गाबाई आर्य भी उनके साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ी तथा उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई में आदर्श पत्नी बन बाबा लक्ष्मणदास आर्य की प्रेरणा स्त्रोत बनीं।[3]

1910 में जब श्रीमती दुर्गाबाई आर्य के पति बाबा लक्ष्मणदास जी लाहौर जेल से रिहा होकर ऊना आये तो वे महात्मा हसंराज के प्रभाव से आर्य समाज के सदस्य बन गये। श्रीमती दुर्गाबाई आर्य ने भी 1912 में आर्य समाज में प्रवेश किया और ऊना में ष्आर्य महिला मण्डलष् का गठन कर महिला कल्याणए महिला जागृतीए शक्तिकरण तथा छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयों से भिड़ने तथा अपने क्षेत्र में महिलाओं का नेतृत्व शुरू किया और समाज सुधार के अनेक कार्य शुरू किये।[4]

जब 1919 में महात्मा गाँधी ने काँग्रेस को एक राष्ट्रव्यापी एवं सर्वाधिक शक्तिशाली राजनैतिक दल का रूप प्रदान किया तो ऊना में दुर्गाबाई आर्य ने पति सहित काँग्रेस में प्रवेश किया। 1921 में असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व सम्भाला तथा महात्मा गाँधी के आदेश पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई। स्परिवार सहित खादी पहनने का व्रत लिया तथा खादी का प्रचार किया। उसने ऊना में ष्महिला खादी मण्डलष् की स्थापना की और महिलाओं को एकत्रित करके उन्हें सूत कातनाए दरी बुननाएवस्त्र बनाना सिखनाए विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की प्रेरणा का कार्य आरम्भ किया। नगर में विदेशी वस्त्रों को जलाने के जलूसों का नेतृत्व किया और शराब के ठेकों पर धरना देने का क्रम जारी रखा। दोनों पति पत्नी ने काँग्रेस का प्रचार तथा प्रसार करना शुरू किया तथा ऊना शहर और आसपास के इलाकों में काँग्रेस के अनेक सदस्य बनाए ।

1922 में श्रीमती दुर्गाबाई आर्य ने आनन्दपुर साहिब से कामागाटामारू ज़हाज के कप्तान दीवन पोहलो राम की धर्मपत्नी श्रीमती जमना देवी सहित विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के विशाल जलूस का नेतृत्व किया। जिसके फलस्वरूप दोनों महिला नेताओं को दो दो माह की कठोर कैद की सज़ा भुगतनी पड़ी।[5] पति बाबा लक्ष्मणदास आर्य के पदचिन्हों का अनुसरण करने के कारण श्रीमती दुर्गाबाई आर्य ने अपने बच्चों को भी देशभक्ति तथा समाज सेवा के संस्कार देकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाने की प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप मार्चए1929 को पंजाब काँग्रेस कमेटी की वार्षिक कान्फ्रेंस के समय उनके श्रेष्ठ पुत्र सत्यप्रकाश ने काँग्रेस का झण्डा जिलाधीश की कोर्ट में लहराया और नारा दिया किः-

ष्हिन्दुस्तान हमारा हैएक्या रखा अँग्रेजो यहाँ तुम्हारा है ष्

इस घटना के फलस्बरूप अँग्रेज़ी डिप्टी कमीश्नर ने उसे 13 वर्ष की आयु में अदालत के वर्खास्त होने तक कैद की सज़ा दी।[6]

1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय ऊना में उनके पति बाबा लक्ष्मणदास आर्य व सपुत्र सत्यप्रकाश बागी को गिरफ़्तार किया गया और बोस्टल जेल में एक वर्ष तक जेल में सख्त यातनाएँ दी तो श्रीमती दुर्गाबाई और भी क्राँतिकारी के रूप

में उभरी। जूनए 1930 में श्रीमती दुर्गाबाई ने धैर्य और साहस के ऊना में‘‘महिला मण्डल’’की स्थापना की तथा ऊना में प्रत्येक माँ से आग्रह किया कि वे एक पुत्र देश की स्वाधीनता की लड़ाई के लिए प्रदान करें।[7]

1935 के दौरान श्रीमती दुर्गाबाई ने ऊना में महिला काँग्रेस का सुदृढ़ संगठन बनाया और खुले रूप से गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में भाग लिया परन्तु ब्रिटिश सरकार को यह सहन न हो सका और इस समय उनके पति का अर्जीनवीसी का लाईसेंस रद्द कर दिया गया।[8]

दूसरे महायुद्ध के समय अँग्रेज़ स्कूल के बच्चों से ‘वारफण्ड’ लेते थे।‘वारफण्ड’ के अन्र्तगत अँग्रेज़ सभी छात्रों को फ़्लैग भी देते थे तथा चन्दा इक्ट्ठा करते थे। माता दुर्गाबाई के दो छोटे बेटे सत्यमित्र बक्शी तथा सत्यभूषण शास्त्रीए उसी समय स्थानीय स्कूल में पढ़ते थे दोनों पुत्रों ने ‘वारफण्ड पालिसी’ का कड़ा विरोध किया। जिसके फलस्वरूप दोनों को स्कूल से निकाल दिया गया।[9] उनके ज्येष्ठ पुत्र ‘सत्य प्रकाश बागी’ भी इसी काल में व्यक्तिगत् सत्याग्रह आन्दोलन में गिरफ़्तार हुए और एक वर्ष के कड़े कारावास तथा 500 रूपये जुर्माने की सज़ा पाकर लायलपुर जेल में बन्दी रहे।

उनके छोटे पुत्र सत्यमित्र बक्शी और सत्यभूषण शास्त्री ने 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया जिसके फलस्वरूप सत्यमित्र बक्शी को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ी गतिविधियों के कारण नौ मास कारावास की सज़ा मिली। सत्यभूषण शास्त्री को 1945 में बन्दी बनाया गया। इन्हीं गतिविधियों के कारण उन्हें डेढ़ वर्ष भूमिगत् रहना पड़ा। इस समय श्रीमती दुर्गाबाई महिला काँग्रेस के नेतृत्व को सम्भाले हुई थी।[10]

15 अगस्त 1947 को जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो उन्होंने घर तथा काँग्रेस के दफ़्तर में दीपमालाएँ जलाई।[11] परिवार के सभी सदस्यों में निष्काम देशभक्ति की भावना उत्पन्न करनाए उच्च विचारों वाली माता दुर्गाबाई आर्य के कारण ही था। इसके पति बाबा लक्ष्मणदास आर्य अपनी पत्नी का देशप्रेम व भक्ति देखकर गर्व से सिर ऊँचा कर कहते थे कि यदि श्रीमती दुर्गाबाई आर्य अन्तरात्मा से भारतीय स्वतन्त्रता सँग्राम में सहयोग न देती तो वह कभी भी स्परिवार अपने उद्देश्य में सफल न होते। पति की आज्ञाकारिणी श्रीमती दुर्गाबाई आर्य भी आजीवन सामाजिक सेवा से जुड़ी रही। उनकी सेवाएँ महिला वर्ग के लिए सदैव प्रेरणादायक रहेंगी।[12]

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् श्रीमती दुर्गाबाई अपने पति सहित हिसार जाकर समाज सेवा में तल्लीन हुई। क्योंकि वहाँ भारत सरकार ने आर्थिक सहायता के रूप में हिसारए हरियाणा में भूमि अलाट की थी। उन्होंने अपना सर्वस्व देश की आज़ादी के लिए न्यौच्छावर कर दिया।[13]

25 दिसम्बरए 1976 को काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र की 20वीं शताब्दी की इस पहली क्राँतिकारी महिला दुर्गाबाई का हिसारए हरियाणा में देहान्त हो गया।[14] उन का यह योगदान देश की आज़ादी के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा।

6ण निष्कर्षरू.

इस प्रकार पहली क्राँतिकारी महिला दुर्गाबाई जी आर्य व उनका परिवार काए भारतीय स्वतन्त्रता सँग्राम के इतिहास में योगदानए एक अपनी ही तरह का बेमिसाल उदाहरण है। उनका यह योगदान देश की आज़ादी के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

7ण संदर्भ सूची:-

1ण्हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला 2005 पृष्ठ 35ण्य *देखियेए* हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानीए खण्ड प्रथमए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1985 पृष्ठ 32ण

2ण्हिमाचल प्रदेश *सरकारः हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानीए खण्ड प्रथमए*भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1985 पृष्ठ 17ण्य *देखियेए साक्षात्कारः* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यए परिशिष्ट *(*4द्ध पृष्ठ 378ए व साक्षात्कार*:* सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यएपरिशिष्ट (5द्ध पृष्ठ 379ए *क्तण ।उंत ैपदही च्वौंतरू चैण्क जीमेपेए ब्वदजतपइनजपवद व िथ्तममकवउ थ्पहीजमते ंदक डंतजलते व िझंदहतं 1805.1947ण*

3ण्हिमाचल प्रदेश सरकार*: स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला 2005 पृष्ठ 32ए33ण्य *देखियेए* हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्तए* इतिहासए भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए1996 पृष्ठ 68ए69ण

4ण्हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्तए इतिहासए* भाषाएवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1996 पृष्ठ 71ण्य *देखियेएपंजाब केसरीः* जालन्धरए 24 दिसम्बरए1985ण्य *देखियेए वीर प्रतापः* जालन्धरए 28 दिसम्बरए 1985ण

5ण्हिमाचल प्रदेश सरकारः *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानीएखण्ड.2ए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1985 पृष्ठ 17ण्य *देखियेए* हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमलाए 2005 पृष्ठ 33ण

6ण हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 2005 पृष्ठ 33ण

7ण*पंजाब केसरी*ःजालन्धरए 24 दिसम्बरए 1985ण्य *देखियेए* हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्तए इतिहासए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1996 पृष्ठ 102ण

8ण्हिमाचल प्रदेश *सरकारः स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए2005 पृष्ठ 33ण

9ण्हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्तए इतिहासए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1996 पृष्ठ 139ण

10ण हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 2005 पृष्ठ 34ण

11ण्हिमाचल प्रदेश सरकार*: हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्तए इतिहासए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 1996 पृष्ठ 177ण

12ण हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभागए शिमलाए 2005पृष्ठ 34

13ण *साक्षात्कारः* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यए परिशिष्ट *(*4द्ध पृष्ठ 378ए व *साक्षात्कार*: सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यए परिशिष्ट *(*5द्ध पृष्ठ 379ए *क्तण ।उंत ैपदही च्वौंतरू चैण्क जीमेपेए ब्वदजतपइनजपवद व िथ्तममकवउ थ्पहीजमते ंदक डंतजलते व िझंदहतं 1805.1947ण*

14ण्हिमाचल प्रदेश सरकारः *स्वाधीनता का संकल्पए* भाषा एवं संस्कृति विभागएशिमलाए 2005 पृष्ठ 35ण्य *देखियेए साक्षात्कारः* सत्यामित्र वक्शी सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यए परिशिष्ट *(*4द्ध पृष्ठ 378ए व *साक्षात्कार*: सत्याभूषण शास्त्री सुपुत्र वावा लक्ष्मणदास आर्यए परिशिष्ट *(*5द्ध पृष्ठ 379ए *क्तण ।उंत ैपदही च्वौंतरू चैण्क जीमेपेए ब्वदजतपइनजपवद व िथ्तममकवउ थ्पहीजमते ंदक डंतजलते व िझंदहतं 1805.1947ण*